सूर्योदय-स्वस्थ बचपन

मासिक न्यूज़लेटर फरवरी 2026 अंक-2

अपर मुख्य सचिव की कलम से...

चाइल्ड हेल्थ न्यूज़लेटर के इस अंक का विशेष विषय "गोल्डन मिनट" नवजात शिशु के जीवन की सुरक्षा का मूल आधार है। जन्म के तुरंत बाद का पहला एक मिनट अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसी क्षण में की गई सही, त्वरित और कुशल देखभाल नवजात मृत्यु एवं जटिलताओं को उल्लेखनीय रूप से कम कर सकती है।

SRS 2023 के अनुसार भारत में नवजात मृत्यु दर (Neonatal Mortality Rate) 26 प्रति 1000 जन्म है, जिनमें से दो तिहाई शिशुओं की मृत्यु पहले 28 दिनों में हो जाती है। नवजात मृत्यु के प्रमुख कारणों में समय से पहले जन्म, Birth Asphyxia और संक्रमण शामिल हैं। लगभग 10% नवजातों को जन्म के समय श्वास सहायता की आवश्यकता होती है, जबकि 1% को उन्नत पुनर्जीवन (Advanced Resuscitation) की जरूरत पड़ती है। इन आँकड़ों से स्पष्ट है कि प्रसव कक्ष में उपलब्धता, तत्परता और कौशल ही जीवन और मृत्यु के बीच निर्णायक अंतर सिद्ध हो सकते हैं। यह हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है कि प्रसव कक्ष, NBCC (Newborn Care Corner) तथा NBSU (Newborn Stabilization Unit) में निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ सुनिश्चित की जाएँ।

"गोल्डन मिनट" के दौरान जन्म के तुरंत बाद नवजात को त्वरित सुखाना और ऊष्मा संरक्षण, श्वास का तत्काल मूल्यांकन, आवश्यकता होने पर बैग-एंड-मास्क वेंटिलेशन तथा निरंतर निगरानी एवं समयबद्ध हस्तक्षेप नवजात के जीवन संरक्षण हेतु अत्यन्त अनिवार्य है। प्रत्येक स्टाफ नर्स, प्रत्येक चिकित्सक तथा मातृ एवं नवजात देखभाल से जुड़े प्रत्येक स्वास्थ्य कर्मी का यह कर्तव्य है कि वे इस एक मिनट में सतर्क, सक्षम और तत्पर रहें। प्रदेश सरकार सभी संस्थानों में नियमित प्रशिक्षण (NSSK/ Navjaat Shishu Suraksha Karyakram), आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता, गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम, NBCC एवं NBSU की सुदृढ़ आधारभूत संरचना के माध्यम से नवजात स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हर नवजात को जीवन की सुरक्षित, स्वस्थ और सम्मानजनक शुरुआत मिले। "गोल्डन मिनट" केवल समय का एक भाग नहीं, बल्कि भविष्य की नींव है।

अमित कुमार घोष (आई.ए.एस.)
अपर मुख्य सचिव,
चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा चिकित्सा शिक्षा,
उत्तर प्रदेश शासन

स्कैन करें और परखें अपना ज्ञान

मिशन निदेशक की कलम से...

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के *चाइल्ड हेल्थ न्यूज़लेटर* के इस अंक का विषय **"गोल्डन मिनट"** नवजात शिशु के जीवन की रक्षा की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश देता है। जन्म के बाद का "पहला एक मिनट" वह निर्णायक समय होता है, जिसमें प्रदान की गई सही, समयबद्ध एवं कुशल देखभाल सीधे तौर पर *नवजात मृत्यु दर* (NMR) एवं अन्य असामान्यताएं जैसे कि सेरिब्रल पाल्सी को कम करने एवं उससे बचाव करने में सहायक सिद्ध होती है।

नवजात को गुणवत्तापूर्ण देखभाल उपलब्ध कराना केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक साझा जिम्मेदारी है। इसके लिए यह अनिवार्य है कि राज्य के सभी स्वास्थ्य संस्थान-प्राथमिक स्तर से लेकर तृतीयक स्तर तक-नवजात के स्वागत एवं देखभाल के लिए पूर्णतः तैयार हों। प्रसव कक्ष, NBCC एवं NBSU में आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता एवं क्रियाशीलता, प्रशिक्षित मानव संसाधन तथा मानक प्रोटोकॉल का अनुपालन सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता है।

साथ ही ASHA/ ANM/ CHO/ CHC FRU/एम्बुलेंस/सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान / ग्राम प्रधान को भी गोल्डन मिनट का महत्व समझाना जरुरी है, जनभागीदारी, सामूहिक जिम्मेदारी एवं जनजागरूकता के साथ गर्भवती महिला के परिवार एवं निकटजन की भी भूमिका है ताकि गर्भवती महिला को समय रहते किसी निर्धारित प्रसव केंद्र (सरकारी या अन्य केंद्र) ले जाना सुनिश्चित किया जा सके।

मुझे विश्वास है कि **"गोल्डन मिनट"** पर केंद्रित यह पहल नवजात स्वास्थ्य सेवाओं को और सुदृढ़ करेगी तथा प्रदेश में NMR में सतत कमी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

डॉ. पिंकी जोवल (आई.ए.एस.)
मिशन निदेशक,
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश

डिलेयड कॉर्ड क्लैम्पिंग: पहले गोल्डन मिनट की एक छोटी लेकिन जीवन भर लाभ देने वाली प्रक्रिया

डॉ. ब्रजेश कुमार
वरिष्ठ बालरोग विशेषज्ञ
लोक बंधु अस्पताल, लखनऊ

डिलेयड कॉर्ड क्लैम्पिंग क्या है?

डिलेयड कॉर्ड क्लैम्पिंग का मतलब है कि बच्चे के **जन्म के बाद कम से कम 30-60 सेकंड तक नाल न काटी जाए।** इन कुछ सेकंडों में माँ के शरीर से बच्चे को थोड़ा और खून मिलता है। इससे बच्चे के शरीर में खून की मात्रा बढ़ती है, आयरन की मात्रा बढ़ती है, दिमाग के विकास में मदद मिलती है। यह एक सरल और बिना खर्च की प्रक्रिया है। इसे समय से जन्मे (टर्म) और समय से पहले जन्मे (प्री-टर्म) दोनों बच्चों में किया जा सकता है यदि बच्चे को तुरंत रिससिटैशन की आवश्यकता न हो।

कैसे करें?

- जन्म के तुरंत बाद शिशु को माँ के पेट पर रखें।
- बच्चे को अच्छी तरह सुखाएँ। उसे माँ की छाती पर रखें और साफ कपड़े से ढक दें।
- कम से कम 30-60 सेकंड प्रतीक्षा करें। **नाल को तुरंत क्लैम्प करने की जल्दबाज़ी न करें।**
- इसके बाद स्टेराइल तकनीक से नाल को क्लैम्प कर काटें।

हमें 30-60 सेकंड इंतज़ार क्यों करना चाहिए?

नवजात शिशु के लिए लाभ:

बच्चे को अधिक खून और आयरन मिलता है	बच्चा बेहतर तरीके से साँस ले पाता है	समय से पहले जन्मे बच्चों के लिए बहुत फायदेमंद	दिमाग के विकास में मदद
• बच्चे को लगभग 30% तक अतिरिक्त खून मिल सकता है • हीमोग्लोबिन बढ़ता है • एनीमिया से बचाव होता है	• ऑक्सीजन की आपूर्ति बेहतर होती है • दिल की धड़कन स्थिर रहती है • जन्म के बाद शरीर जल्दी संभलता है	• खून चढ़ाने की ज़रूरत कम पड़ती है • दिमाग में खून जमने या बहने का खतरा कम होता है • पेट की गंभीर समस्याएँ कम होती हैं • ब्लड प्रेशर बेहतर रहता है	• बच्चे के विकास और सीखने की क्षमता बेहतर होती है

माँ के लिए लाभ

अगर प्रसव के तीसरे चरण का प्रबंधन (AMTSL) सही तरीके से किया जाए, तो डिलेयड कॉर्ड क्लैम्पिंग से माँ में अधिक रक्तस्राव (PPH) का खतरा नहीं बढ़ता। इसलिए यह माँ और बच्चे दोनों के लिए सुरक्षित है।

कब करें?

सभी टर्म और प्री-टर्म बच्चों में जब बच्चे को तुरंत रिससिटैशन की आवश्यकता न हो

मुख्य संदेश

✓ कोई अतिरिक्त खर्च नहीं ✓ केवल 30-60 सेकंड ✓ जीवनरक्षक
✓ एनीमिया से बचाव ✓ दिमाग के विकास में सुधार

यह प्रक्रिया विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स (IAP) और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा अनुशंसित है।
यह भारत की न्यूबॉर्न एक्शन प्लान (INAP) का भी हिस्सा है।

नवजात शिशुओं में हाइपोथर्मिया: कारण, प्रबंधन एवं रोकथाम

डॉ. आनंद अग्रवाल
उप महाप्रबंधक, चाइल्ड हेल्थ,
एनएचएम, उत्तर प्रदेश

हाइपोथर्मिया क्या है ?

जब नवजात शिशु का शरीर का तापमान **36.5°C** से कम हो जाता है, तो इसे हाइपोथर्मिया कहते हैं।

श्रेणियाँ:

- हल्का: 36.0-36.4°C
- मध्यम: 32.0-35.9°C
- गंभीर: <32°C

नवजात को जल्दी ठंड क्यों लगती है?

- शरीर छोटा, वजन कम -गर्मी जल्दी निकलती है
- शरीर में वसा कम (विशेषकर प्री-टर्म और LBW शिशु
- जन्म के बाद शरीर गीला होता है

तापमान गिरने के मुख्य कारण

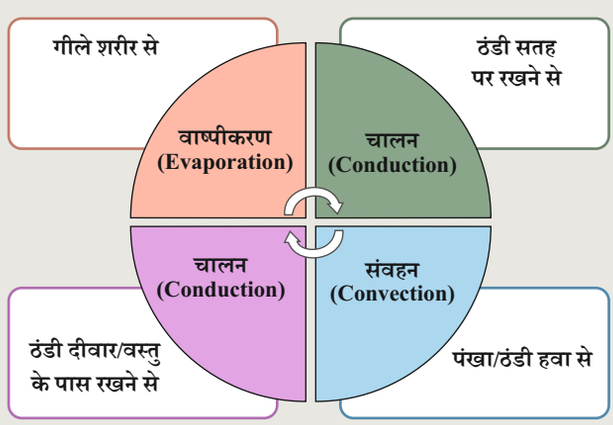

हाइपोथर्मिया के लक्षण

- हाथ-पैर ठंडे
- सुस्ती
- दूध कम पीना
- कमजोर रोना
- त्वचा नीली पड़ना
- साँस लेने में दिक्कत

 # देर होने पर सेप्सिस, हाइपोग्लाइसीमिया, श्वसन संकट और मृत्यु तक हो सकती है।

पहला गोल्डन मिनट: क्या करें? (Delivery Point Checklist)

- ✓ प्रसव कक्ष का तापमान कम से कम 25°C रखें
- ✓ जन्म के तुरंत बाद शिशु को अच्छी तरह सुखाएँ
- ✓ गीला कपड़ा तुरंत हटाएँ
- ✓ शिशु को माँ की छाती पर त्वचा से त्वचा संपर्क में रखें
- ✓ 1 घंटे के अंदर स्तनपान शुरू करें
- ✓ टोपी, मोजे और गर्म कपड़े पहनाएँ
- ⊘ जन्म के तुरंत बाद स्नान न कराएँ (कम से कम 24 घंटे बाद)

हाइपोथर्मिया का प्रबंधन - गंभीरता के अनुसार

हल्का (36.0-36.4°C)	मध्यम (32-35.9°C)	गंभीर (<32°C)
• कंगारू मदर केयर (KMC) शुरू करें	• केएमसी या रेडिएंट वार्मर	• आपातकालीन देखभाल
• गर्म कपड़े पहनाएँ	• ब्लड शुगर जाँचें	• रेडिएंट वार्मर में धीरे-धीरे तापमान बढ़ाएँ
• बार-बार स्तनपान कराएं	• हर 30-60 मिनट तापमान मॉनिटर करें	• IV फ्लूइड, ऑक्सीजन
• तापमान की निगरानी करें		• एसएनसीयू रेफर करें

हाइपोथर्मिया की रोकथाम

रोकथाम उपचार से अधिक प्रभावी और सरल है। इसके लिए "वार्म चेन" (Warm Chain) की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसमें शामिल हैं: गर्म प्रसव कक्ष (कम से कम 25°C), जन्म के तुरंत बाद शिशु को अच्छी तरह सुखाना, त्वचा से त्वचा संपर्क, जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान की शुरुआत, स्नान में विलंब, शिशु को सिर सहित पर्याप्त गर्म कपड़े पहनाएँ और सुरक्षित परिवहन।

प्रसूति और सेवा प्रदाता के लिए मुख्य संदेश

- हर जन्म पर तापमान की सुरक्षा उतनी ही जरूरी है जितनी साँसों की जाँच।
- प्री-टर्म और कम वजन वाले शिशुओं पर विशेष ध्यान दें।
- "गोल्डन आवर" में की गई सही तापीय देखभाल जीवन बचा सकती है।

नवजात हाइपोथर्मिया एक सामान्य लेकिन रोकी जा सकने वाली समस्या है।
शिशु को तुरंत सुखाना + त्वचा से त्वचा संपर्क + जल्दी स्तनपान = सुरक्षित और गर्म शुरुआत

गोल्डन मिनट्स में जीती ज़िंदगी - सीएचसी सुरियावां की टीम ने बचाई नवजात की जान

जनपद - भदोही, 10 फरवरी 2026 की सुबह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सुरियावां में नियमित रूप से स्वास्थ्य सेवाएँ संचालित हो रही थीं। सुबह लगभग 11:00 बजे 32 वर्षीय श्रीमती जमुना बेगम को प्रसव पीड़ा के साथ अस्पताल लाया गया। वे 42 सप्ताह 5 दिन की गर्भावस्था (पोस्ट-डेट) में थीं, जिससे यह गर्भावस्था पहले से ही उच्च जोखिम (एचआरपी) की श्रेणी में थी। जांच के दौरान स्पष्ट हुआ कि शिशु ब्रीच प्रेजेंटेशन (उल्टा) में है। उस समय गर्भाशय मुख 9 सेमी तक खुल चुका था, इसलिए रेफरल की कोई संभावना नहीं थी। परिस्थिति चुनौतीपूर्ण थी, किंतु टीम ने धैर्य और तत्परता के साथ प्रसव प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। कुछ ही मिनटों बाद, सुबह 11:57 बजे सामान्य प्रसव से शिशु का जन्म हुआ। परंतु जन्म के बाद शिशु ने रोना प्रारंभ नहीं किया। वह कॉनियम से सना हुआ था और उसमें जन्म श्वासावरोध (Birth Asphyxia) के स्पष्ट लक्षण दिखाई दे रहे थे। यह स्थिति अत्यंत गंभीर थी, जहाँ प्रत्येक सेकंड कीमती था। यही वे "गोल्डन मिनट्स" थे, जो जीवन और मृत्यु के बीच अंतर तय करते हैं।

डॉ. पूनम
(LMO)

डॉ. बिपिन यति
(शिशु रोग विशेषज्ञ)

स्थिति की गंभीरता को समझते हुए स्टाफ नर्स रंजना ने तुरंत नवजात रिससिटैशन (Newborn Resuscitation) की प्रक्रिया प्रारंभ की। शिशु को रेडिएंट वार्मर पर स्थानांतरित किया गया। सही पोज़िशनिंग, सक्शन, ड्राइंग एवं स्टिमुलेशन किया गया, किंतु प्रारंभिक प्रयासों के बावजूद अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। इसके बाद डॉ. बिपिन यति (शिशु रोग विशेषज्ञ) एवं डॉ. पूनम (LMO) के मार्गदर्शन में पूरी नर्सिंग टीम ने समन्वित प्रयास प्रारंभ किए। फिर सुबह 11:59 बजे बैग एवं मास्क द्वारा ऑक्सीजन के साथ वेंटिलेशन शुरू किया गया। लगभग 10 मिनट तक किए गए निरंतर प्रयासों, टीम की एकाग्रता, कौशल और प्रशिक्षण का सकारात्मक परिणाम सामने आने लगा। धीरे-धीरे शिशु का रंग नीले से गुलाबी होने लगा और अंततः उसने ज़ोर से रोना शुरू किया। यह पल पूरे स्टाफ के लिए अत्यंत संतोष और राहत भरा था।

यह घटना केवल एक चिकित्सकीय प्रक्रिया नहीं, बल्कि प्रशिक्षित मानव संसाधन, समयबद्ध कार्रवाई और प्रभावी टीमवर्क का जीवंत उदाहरण है। सीएचसी सुरियावां की टीम ने यह दिखाया कि उचित प्रशिक्षण एवं तत्परता से जटिल परिस्थितियों में भी समय पर निर्णय लेकर नवजात जीवन को सुरक्षित रखा जा सकता है। यह उपलब्धि बाल स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता, आपातकालीन तैयारी और नवजात देखभाल में संस्थागत सुदृढ़ता को रेखांकित करती है।

उपचार के बाद शिशु की स्थिति

- शिशु की स्थिति स्थिर हुई।
- पल्स 98 प्रति मिनट से बढ़कर 130 प्रति मिनट हुआ।
- SpO_2 96% तक पहुँचा।
- रेफरल की आवश्यकता नहीं पड़ी।
- शिशु को NBSU में निगरानी हेतु स्थानांतरित किया गया।

"हमारे सीएचसी के सुव्यवस्थित एवं प्रशिक्षित स्टाफ तथा प्रभावी टीमवर्क के कारण जन्म श्वासावरोध (Birth Asphyxia) जैसी गंभीर जटिलता का समय रहते सफल प्रबंधन संभव हो सका। यह घटना हमारे संस्थान की क्षमता, तत्परता एवं गुणवत्तापूर्ण नवजात देखभाल का एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है।"

- डॉ. अभिषेक कुमार नाग,
एमओ-आईसी, सीएचसी, सुरियावां

जन्म के बाद का पहला मिनट: नवजात जीवन रक्षा की आधारशिला

डॉ. मिलिंद वर्धन
महाप्रबंधक, चाइल्ड हेल्थ एनएचएम, उत्तर प्रदेश

जन्म के बाद के पहले साठ सेकंड जिसे गोल्डन मिनट कहा जाता है, मानव जीवन के सबसे निर्णायक पलों में से होते हैं। इस छोटे से समय में क्या किया जाता है, या क्या नहीं किया जाता, यह तय करता है कि नवजात शिशु सामान्य रूप से साँस ले पाएगा या नहीं, शरीर का तापमान बनाए रख पाएगा या नहीं, और गर्भ के बाहर के नए वातावरण में सुरक्षित रूप से अनुकूलित हो पाएगा या नहीं। इस एक मिनट में समय पर और सही कदम उठाए जाने से नवजात मृत्यु के एक बड़े हिस्से को रोका जा सकता है, जिनमें से कई पूरी तरह से रोके जा सकने योग्य होती हैं।

उत्तर प्रदेश में पिछले एक दशक के दौरान नवजात मृत्यु दर (NMR) में निरंतर कमी दर्ज की गई है। वर्ष 2011 में राज्य का NMR प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 45 से अधिक था, जो SRS 2023 के अनुसार घटकर लगभग 26 हो गया है। यह प्रगति संयोग नहीं, बल्कि संस्थागत प्रसवों में हुई उल्लेखनीय वृद्धि का परिणाम है। आज अधिकांश प्रसव स्वास्थ्य संस्थानों में, प्रशिक्षित स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की उपस्थिति में हो रहे हैं। इससे गोल्डन मिनट के दौरान अर्ली न्यूबोर्न केयर (ENBC) तथा आवश्यकता पड़ने पर ससमय नवजात रिससिटैशन सुनिश्चित करने की संभावना बढ़ी है।

चूँकि लगभग 60% संस्थागत प्रसव सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में हो रहे हैं, इसलिए नवजात शिशु स्टेबलाइजेशन इकाइयों (NBSUs) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। सुचारु रूप से कार्यरत एनबीएसयू और नवजात शिशु देखभाल कॉर्नर (NBCCs) अब केवल सहायक सुविधाएँ नहीं, बल्कि नवजात जीवन रक्षा की केंद्रीय धुरी बन चुके हैं। इस स्तर पर उपलब्ध गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ नवजात को प्रारंभिक अवस्था में स्थिर कर सकती हैं, सामान्य जटिलताओं का प्रभावी प्रबंधन कर सकती हैं तथा जिला अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों को होने वाले अनावश्यक रेफरल को काफी हद तक कम कर सकती हैं। इससे विशेष नवजात शिशु देखभाल इकाइयों (SNCUs) पर पड़ने वाला भार भी कम होता है और उच्च स्तरीय इकाइयाँ अधिक गंभीर मामलों पर ध्यान केंद्रित कर पाती हैं।

साथ ही, चिकित्सालयों में प्रदान की जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता पर विषेश ध्यान देना भी आवश्यक है। प्रसव कक्ष से संबंधित कार्यों व सेवाओं की गुणवत्ता, निर्धारित प्रोटोकॉल का सख्त अनुपालन, सभी उपकरणों का फंक्शनल होना, तथा डॉक्टरों और नर्सों का कौशल एवं आत्मविश्वास, ये सभी कारण सीधे तौर पर नवजात स्वास्थ्य परिणामों को प्रभावित करते हैं। हमें यह भी स्पष्ट रूप से समझना होगा कि नवजात रिससिटैशन और ENBC केवल बाल रोग विशेषज्ञ की जिम्मेदारी नहीं है, प्रसव प्रक्रिया में शामिल प्रत्येक डॉक्टर और प्रत्येक नर्स को इन जीवनरक्षक उपायों में दक्ष होना चाहिए। इसके लिए नियमित प्रशिक्षण, मेंटरिंग और सहयोगी सुपरविजन के माध्यम से उनकी निरंतर कौशल वृद्धि पूरी तरह से सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।

अंततः, नवजात मृत्यु दर में कमी किसी जटिल तकनीक का परिणाम भर नहीं है। सरल, साक्ष्य-आधारित हस्तक्षेप (evidence-based interventions) जैसे - गुणवत्तापरक लेबर रूम प्रैक्टिस, प्रभावी ENBC, समयबद्ध नवजात रिससिटैशन, NBSUs और NBCCs का सर्वोत्तम उपयोग, तथा सुदृढ़ होम बेस्ड न्यूबोर्न केयर ही उत्तर प्रदेश में नवजात जीवन रक्षा को तेज़ी से बेहतर बनाने की सशक्त और स्थायी नींव हैं। जन्म के बाद का पहला मिनट छोटा अवश्य है, परंतु यदि उसे सही ढंग से संभाला जाए तो वही एक मिनट नवजात शिशु के संपूर्ण जीवन की सुरक्षित शुरुआत बन सकता है।

गोल्डन मिनट से संबंधित रोचक तथ्य

- जन्म के बाद पहले 60 सेकंड में यदि शिशु रोता या साँस लेता है, तो उसके जीवित रहने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है।
- केवल समय पर साँस दिलाना (Bag & Mask Ventilation) ही लगभग 70% नवजात पुनर्जीवन (रिससिटैशन) मामलों में पर्याप्त होता है।
- जन्म के बाद यदि शिशु को तुरंत गरम और सूखा रखा जाए, तो हाइपोथर्मिया का खतरा आधे से भी कम हो जाता है।
- गोल्डन मिनट में दी गई सही देखभाल, शिशु को SNCU में भर्ती होने से भी बचा सकती है।
- नवजात को जीवन के पहले मिनट में मिला स्पर्श और देखभाल, उसके मस्तिष्क और श्वसन तंत्र को सक्रिय करता है।
- हर मिनट की देरी से शिशु में ऑक्सीजन की कमी का खतरा तेजी से बढ़ता है, इसलिए यह समय "गोल्डन" कहलाता है।
- गोल्डन मिनट पर फोकस करने से कई राज्यों और देशों में नवजात मृत्यु दर (NMR) में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है।

उत्तर प्रदेश शासन | राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश | सहयोग: UP-TSU, unicef for every child

Follow us on: x.com/nhm_up youtube.com/NHMUPIEC nhm.up

अपने सुझाव और प्रतिक्रियाएँ ई-मेल करें: newsletter.ch.nhmup@gmail.com